राष्ट्र के वैश्य रत्न

भाग -3

राष्ट्र के वैश्य रत्न

भाग -3

लेखक : सुबे सिंह गुप्ता

प्रकाशक :
पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट (पंजीकृत)
जी पी-32, मौर्या एन्कलेव
पीतमपुरा, दिल्ली-110034
दूरभाष : 27323078
मोबाइल : 9136553232
E-mail : panchamdham@live.com

राष्ट्र के वैश्य रत्न

भाग -3

मूल्य : 150/-

सुबे सिंह गुप्ता

© सर्वाधिकार सुरक्षित

भारत में सन् 2013 में प्रकाशित

पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट (पंजीकृत)
जी पी-32, मौर्या एन्कलेव
पीतमपुरा, दिल्ली-110034
दूरभाष : 27323078, मो. 9136553232
E-mail : panchamdham@live.com

शब्द सज्जा : **पवनदीप प्रिन्टर्स**
21/33, मास्टर लक्ष्मीनारायण मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-7
दूरभाष : 23842140, मो.: 9312257274

जो मरे नहीं, बस मौन हुए !

श्री सुबे सिंह गुप्ता ने 'राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग-3' पुस्तक में वैश्य अग्रवाल समुदाय के कतिपय महापुरुषों के जीवन-चरित्र के उन प्रसंगों को उजागर किया है जिन्हें पढ़ कर देश-भक्ति और समाजसेवा की दिशा में कार्य करने की प्रबल प्रेरणा मिलती है। अग्र बन्धुओं के जीवन की इन शिक्षाप्रद और मार्गदर्शक घटनाओं को पढने से नवयुवकों के मस्तिष्क पर कर्मवीर बनने का स्थायी प्रभाव पड़ेगा और वे लक्ष्यहीनता से बच कर अपने जीवन को स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ की राह पर लगा कर मानव धर्म का सही मायने में पालन कर यश के भागी बनेंगे।

कुल 16 वैश्य अग्रवाल बन्धुओं के जीवन-चरित्र को श्री सुबेसिंह गुप्ता जी ने इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है, जिन्हें पढ़ते समय पाठक को ऐसा प्रतीत होता है मानो ये पात्र जीवन्त होकर उसकी आँखों के सम्मुख ही गतिशील हैं। इनमें से कुछ व्यक्ति तो ख्याति प्राप्त हैं (यथा-लाला लाजपतराय, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, जमनालाल बजाज, हनुमान प्रसाद पोद्दार आदि), किन्तु अनेक अल्पज्ञात हैं, जैसे : मुकन्दी लाल, बांकेलाल कंसल, रविचन्द्र गुप्ता, जगदीश प्रसाद आदि) लेखक ने इन दोनों प्रकार के देशभक्त, क्रान्तिकारी, कर्मवीर, समाज-सेवी और मानव-मूल्यों के प्रबल प्रस्तोता व्यक्तियों के जीवन की तमाम छोटी-बड़ी घटनाओं को इस रूप में उजागर किया है कि उन्हें पढ़ते समय एक शिक्षाप्रद औपन्यासिक कृति के आस्वादन का अनुभव होता है और पाठक मन ही मन उन चरित्रों का प्रतिरूप बनने की कल्पना में खो जाता है।

वर्तमान भौतिकवादी युग में अतीत अप्रसांगिक लगता है, किन्तु जब हम इतिहास बन चुके अपने पूर्वज महापुरुषों के जीवन के प्रेरणादायक एवं रोचक प्रसंगों को पढ़ते हैं तो हममें एक जीवनदायिनी शक्ति का संचार होता है और हमारे व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए इन महापुरुषों का जीवन-चरित्र एक प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करता है। अतीत के इन पृष्ठों को पढ़ कर हमें जातीय गौरव का भी एहसास होता है।

श्री सुबेसिंह गुप्ता जी ने इससे पूर्व भी उन वैश्य विभूतियों का चरित्रांकन

किया था जिन पर भारत सरकार ने समय-समय पर टिकट जारी किए हैं। अग्र-महापुरुषों के इन बहुरंगी रेखाचित्रों में ऐसे अनेक प्रेरणाप्रद प्रसंग हैं जिन्हें पढ़कर इन महापुरुषों के प्रति असीम श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है और कुछ दृश्य इन महापुरुषों के महान् त्याग और बलिदान के हैं जो आँखें नम कर देते हैं। श्री गुप्ता जी की खोजपूर्ण दृष्टि ने इनके जीवन की छोटी-बड़ी सभी घटनाओं को बड़े मनोयोग से शब्दबद्ध किया है। उनका श्रम निश्चय ही सराहनीय है और भावी पीढ़ी के लिए संदेशवाहक है। इन महापुरुषों की जीवन-चर्या, संघर्षों से जूझने की शक्ति और देश के लिए मर-मिटने की भावना हम सभी के लिए अमूल्य निधि है। पुस्तक की सफलता पर शुभकामनाएँ देता हूँ।

–डॉ. रमेशचन्द्र गुप्त
अवकाश प्राप्त रीडर
पन्नालाल गिरधर डी.ए.वी. कॉलेज (सायं)

भूमिका

वर्ष 2009 में 'राष्ट्र के वैश्य रत्न-भाग-2' का प्रकाशन हुआ था इस वर्ष 2013 में उसी क्रम में 'राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग-3' प्रस्तुत है। इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशन में चार वर्ष का अन्तर है। मेरा प्रयास है कि जब तक जीवन है वैश्य अग्रवाल समाज पर वर्ष में एक पुस्तक अवश्य प्रकाशित हो। मैंने लेखन का कार्य बालक और बालिकाओं को ध्यान में रखकर वैश्य अग्रवाल समाज से सम्बन्धित साहित्य-विषय-वस्तु वाली पुस्तकों बाल अग्र मंजुषा भाग-1, 2, व 3 तैयार की थीं, क्योंकि नगर में रह रहे इस समाज के इस आयु-वर्ग के बालक अंग्रेजी भाषा माध्यम वाले विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इसलिए इस भाषा में पुस्तक के नहीं होने की कमी अनुभव हुई, इसलिए वर्ष 2010 में 'चिल्ड्रन्स बुक आन अग्रसेन, अग्रोहा एंड अग्रवाल शीर्षक से पुस्तक का प्रकाशन हुआ। वर्ष 2011 में नई पुस्तक प्रकाशन के लिए तैयार थी परन्तु किन्हीं कारणों से उसका विमोचन नहीं हो पाया। वर्ष 2012 में 'पंचमधाम वार्षिकोत्सव' का आयोजन जब 'पंचमधाम' मासिक पत्रिका के चौथे वर्ष में प्रवेश के अवसर पर हुआ, दो पुस्तकों 'मा. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल' और 'अग्र-चिन्तन धारा भाग-1' का विमोचन हुआ।

जब भी कोई नई पुस्तक प्रकाशित होती है, आशा होती है कि उसमें पाठकों के लिए कुछ नया होगा। इतिहास की कोई सीमा नहीं होती। आज जो कुछ हो रहा है वह भविष्य में इतिहास कहलाएगा। यह सर्वविदित है कि पृथ्वी के इतने लम्बे चौड़े स्थान पर सैंकड़ों देश स्थित हैं। प्रत्येक देश में अपने देश के बारे में लिखा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि जो भी घटित हो वह कागज पर उतारा जा सके। कालान्तर में नई पीढ़ी को अनुभव होता है कि इतिहास में क्या छूट गया है। आज उसको किस ज्ञान की आवश्यकता है उसी से शोधकार्य आरम्भ होता है।

राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग-1, 2 और 3 पुस्तकों को तैयार करने में शोध कार्य करने का उद्देश्य नहीं है। परन्तु यह भाव अवश्य है कि वैश्य-अग्रवाल की उन वैश्य-विभूतियों द्वारा देश और समाज के लिए जो कार्य किये हैं उनको वर्तमान

किया था जिन पर भारत सरकार ने समय-समय पर टिकट जारी किए हैं। अग्र-महापुरुषों के इन बहुरंगी रेखाचित्रों में ऐसे अनेक प्रेरणाप्रद प्रसंग हैं जिन्हें पढ़कर इन महापुरुषों के प्रति असीम श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है और कुछ दृश्य इन महापुरुषों के महान् त्याग और बलिदान के हैं जो आँखें नम कर देते हैं। श्री गुप्ता जी की खोजपूर्ण दृष्टि ने इनके जीवन की छोटी-बड़ी सभी घटनाओं को बड़े मनोयोग से शब्दबद्ध किया है। उनका श्रम निश्चय ही सराहनीय है और भावी पीढ़ी के लिए संदेशवाहक है। इन महापुरुषों की जीवन-चर्या, संघर्षों से जूझने की शक्ति और देश के लिए मर-मिटने की भावना हम सभी के लिए अमूल्य निधि है। पुस्तक की सफलता पर शुभकामनाएँ देता हूँ।

–डॉ. रमेशचन्द्र गुप्त
अवकाश प्राप्त रीडर
पन्नालाल गिरधर डी.ए.वी. कॉलेज (सायं)

भूमिका

वर्ष 2009 में 'राष्ट्र के वैश्य रत्न-भाग-2' का प्रकाशन हुआ था इस वर्ष 2013 में उसी क्रम में 'राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग-3' प्रस्तुत है। इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशन में चार वर्ष का अन्तर है। मेरा प्रयास है कि जब तक जीवन है वैश्य अग्रवाल समाज पर वर्ष में एक पुस्तक अवश्य प्रकाशित हो। मैंने लेखन का कार्य बालक और बालिकाओं को ध्यान में रखकर वैश्य अग्रवाल समाज से सम्बन्धित साहित्य-विषय-वस्तु वाली पुस्तकों बाल अग्र मंजुषा भाग-1, 2, व 3 तैयार की थीं, क्योंकि नगर में रह रहे इस समाज के इस आयु-वर्ग के बालक अंग्रेजी भाषा माध्यम वाले विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इसलिए इस भाषा में पुस्तक के नहीं होने की कमी अनुभव हुई, इसलिए वर्ष 2010 में 'चिल्ड्रन्स बुक आन अग्रसेन, अग्रोहा एंड अग्रवाल शीर्षक से पुस्तक का प्रकाशन हुआ। वर्ष 2011 में नई पुस्तक प्रकाशन के लिए तैयार थी परन्तु किन्हीं कारणों से उसका विमोचन नहीं हो पाया। वर्ष 2012 में 'पंचमधाम वार्षिकोत्सव' का आयोजन जब 'पंचमधाम' मासिक पत्रिका के चौथे वर्ष में प्रवेश के अवसर पर हुआ, दो पुस्तकों 'मा. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल' और 'अग्र-चिन्तन धारा भाग-1' का विमोचन हुआ।

जब भी कोई नई पुस्तक प्रकाशित होती है, आशा होती है कि उसमें पाठकों के लिए कुछ नया होगा। इतिहास की कोई सीमा नहीं होती। आज जो कुछ हो रहा है वह भविष्य में इतिहास कहलाएगा। यह सर्वविदित है कि पृथ्वी के इतने लम्बे चौड़े स्थान पर सैंकड़ों देश स्थित हैं। प्रत्येक देश में अपने देश के बारे में लिखा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि जो भी घटित हो वह कागज पर उतारा जा सके। कालान्तर में नई पीढ़ी को अनुभव होता है कि इतिहास में क्या छूट गया है। आज उसको किस ज्ञान की आवश्यकता है उसी से शोधकार्य आरम्भ होता है।

राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग-1, 2 और 3 पुस्तकों को तैयार करने में शोध कार्य करने का उद्देश्य नहीं है। परन्तु यह भाव अवश्य है कि वैश्य-अग्रवाल की उन वैश्य-विभूतियों द्वारा देश और समाज के लिए जो कार्य किये हैं उनको वर्तमान

पीढ़ी समझे और प्रेरणा प्राप्त करे। लगभग सभी विभूतियों के नाम सभी जानते होंगे, एक-दो नये नाम हैं जो इतिहास की पुस्तकों में उपलब्ध नहीं हैं। जगदीश प्रसाद तथा बाँके लाल कंसल दो व्यक्तियों के जीवन परिचय स्वजनों द्वारा प्रकाशित पुस्तक और मौखिक रूप से बताये गये विवरणों से तैयार किये हैं। इन दोनों का देश के स्वाधीनता संघर्ष में रोमांचक कार्य पाठकों पर अवश्य प्रभाव डालेगा। मन्मथनाथ गुप्त, विष्णु शरण दुबलिश, मुकन्दीलाल गुप्त, शहीद सुखदेव और मा. अमीर चन्द ने क्रान्तिकारियों के संगठन में शामिल होकर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर ली थी। मन्मथनाथ गुप्त की अधिकतर आयु शलाखों के पीछे व्यतीत हुई। घर की वित्तीय स्थिति दयनीय थी। माताजी के जल जाने के बाद उपचार के लिए तेल तक खरीदने के लिए पैसे नहीं थे परन्तु देश भक्ति की भावना सभी प्रकार की यातनायें सहन करने से नहीं रोक सकी। मुकन्दीलाल गुप्त एक ऐसे क्रान्तिकारी थे जिसको उसके सगे भाई ने ही धोखा दिया था। क्रान्तिकारी संगठन किस प्रकार काम कर रहे थे इसकी झलक भी देखने को मिलेगी। ऐसी हुतात्माओं की स्मृति को जागृत रखने में रविचन्द्र गुप्त उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं उन्होंने अपने रक्त से उनके चित्र बनवाये जो वृन्दावन में सुश्री ऋतम्भराजी के वात्सल्य ग्राम में प्रदर्शित हैं। उनका जीवन परिचय भी पठनीय है। वैश्य-अग्रवाल की कुछ ख्याति प्राप्त विभूतियों के जीवन परिचय भी इस पुस्तक में हैं। उनके विषय में पाठकों ने कुछ अवश्य पढ़ा होगा। एक-दो व्यक्तियों के जीवन परिचय बालक और बालिकाओं की पुस्तकों 'बाल अग्र मंजूषा भाग-1, 2 और 3 में दिये हैं। वहाँ आवश्यकतानुसार संक्षिप्त रूप में हैं। अब उनके द्वारा देश और समाज के लिए किये गये कार्यो को दिया है जिनको जानने से पाठक को प्रेरणा प्राप्त होगी और उनकी तरह कार्य करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

वैश्य-अग्रवाल समाज के परिवारों में पुस्तकों को नहीं के बराबर पढ़ा जाता है। इस सच्चाई के साथ यह भी सच्चाई है कि वे किसी अच्छे काम को धनाभाव के कारण रुकने नहीं देते। बड़ी उदारता से अपनी नेक कमाई से अंशदान देते हैं। अभी तक 10 (दस) पुस्तकों में आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। पिछली दो पुस्तकों में मारुति सोप मिल्स के संचालक श्री ऋषि कुमार तायल व शिवजी लाल तायल तथा मै. श्याम अवतार लाईट्स प्रा.लि. के संचालक श्री राम अवतार व श्याम अवतार ने सहयोग दिया। इसके लिए पुस्तकों का लेखक इन

अग्र-बन्धुओं का आभारी है और हार्दिक धन्यवाद देता है। इस बार भी इस पुस्तक के प्रकाशन में मारुति सोप के उपरोक्त संचालकों ने सहयोग दिया है। इसके लिए लेखक अनुग्रहित हैं।

डॉ. रमेश चन्द्र गुप्त का विशेष रूप से आभारी हूँ। उन्होंने इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को पूरी तरह देखा और कहीं भी अशुद्धि या विसंगति थी उसको दूर किया और आरम्भ में दिये विचार लिख कर दिये।

अन्त में पुनः पाठकों से निवेदन है कि पुस्तक में शामिल अध्याय विभिन्न उपलब्ध साहित्य से तैयार किये गये हैं उनके तथ्यों में कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता, केवल शब्द और वाक्यों से अवश्य रुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया है। इस प्रयास में कोई त्रुटि दिखाई दे तो उसे सहज रूप में लेकर क्षमादान करें।

2 जुलाई 2013

(आषाढ़ कृष्ण दसवीं सम्वत् 2070)

सुबेसिंह गुप्ता

विषय सूची

1.	पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	1[illegible]
2.	भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र	21-2[illegible]
3.	जमनालाल बजाज	29-35
4.	हनुमानप्रसाद पोद्दार	37-43
5.	सर गंगाराम	45-53
6.	सेठ जयदयाल डालमिया	55-61
7.	सिद्धान्तवादी अग्र-देशभक्त जगदीश प्रसाद	63-70
8.	मन्मथनाथ गुप्त	75-81
9.	मुकन्दीलाल गुप्त	83-87
10.	विष्णु शरण दुबलिश	89-91
11.	भगतसिंह का साथी-शहीद सुखदेव	93-99
12.	क्रांतिकारी-हनवन्त सहाय	101-103
13.	अग्र शहीद मास्टर अमीर चन्द	105-109
14.	बासप्पा-दासप्पा जत्ती	111-117
15.	बांकेलाल कंसल	119-121
16.	रविचन्द्र गुप्ता	123-128

महालक्ष्मी-उवाच

महालक्ष्मी व्रत कथा महात्म्यम् के अग्रवैश्य वंशानुकीर्ततम् अध्याय में महाराजा अग्रसेन के घोर तप से प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने साक्षात् दर्शन दिये। उन्होंने महाराजा अग्रसेन को अन्य वरदान देने के पश्चात् निम्नलिखित आज्ञा भी दी:-

अग्र चरिता भवेत्येषा, कथा ममतवान्विता।
भुवि येषां गृहे पूजा, लिखिता चापि पुस्तकी॥
तमहं न विमोक्ष्यामि, यावच्चन्द्र दिवाकरौ॥

इष्टदेव महाराजा अग्रसेन की वन्दना

हे अग्रसेन तुमको प्रणाम।
सादर प्रणाम, शत-शत प्रणाम॥

हे अग्रवंश के अधिनायक।
महालक्ष्मी के आराधक॥
अग्रोहा राज्य के संस्थापक।
आदर्श नीति के संवाहक॥
हे वैश्य वंश के गौरव तुम
धन्य धन्य अग्रोहाधाम।
हे अग्रसेन तुमको प्रणाम॥

थे हुए सहायक देव तीन।
हो गए इन्द्र भी तव अधीन।
तुम रहे सदा निज राष्ट्र लीन।
तुमने दिखलाए पथ नवीन।
अब करते हैं ध्यान तुम्हारा।
सारे वंशज आठोयाम।
हे अग्रसेन तुमकों प्रणाम

हे नृप वल्लभ के कुलनंदन।
हे नागवंश के अनुबंधन।
पावन केसरिया ध्वज वंदन।
सब वंशज करते अभिनंदन।
हे त्याग, तपस्या के स्वरूप।
धर्म मूर्ति अभिराम।
हे अग्रसेन तुमको प्रणाम॥

श्रद्धा सुमन करो स्वीकार।
सदा आपकी जय जयकार।
'दीपंकर' विनती बारम्बार।
अग्रवैश्य का हो उद्धार।
एक ईंट और एक रुपया।
सहयोग तुम्हारा ललाम।
जब तक है यह धरती अम्बर।
तब तक अमर तुम्हारा नाम।
हे अग्रसेन तुमको प्रणाम।

-डॉ. दीपंकर गुप्त

पंजाब केसरी

लाला लाजपत राय

पंजाब केसरी
लाला लाजपतराय

लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 ई. में उनके ननिहाल ढोडिग्राम में हुआ। उनके पिता श्री राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगराव ग्राम के रहने वाले थे। वे सरकारी शिक्षा विभाग में काम करते थे। इसलिए उनकी बदली होती रहती थी। लाजपतराय जी ने 1880 ई. में एण्ट्रेन्स की परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास की तो छात्रवृत्ति मिलने लगी। पिताजी शिक्षित थे। फारसी और गणित स्वयं पढ़ाते थे। आगे की शिक्षा के लिए उनको लाहौर जाना पड़ा क्योंकि दिल्ली का कॉलेज 1887 ई. में तोड़ दिया गया था। एफ. ए. की परीक्षा के साथ मुख्तारी का अध्ययन किया और अपने गाँव जगराव में काम करना आरम्भ किया। 1885 ई. में वकालत की परीक्षा पास की और हिसार शहर में वकालत करनी प्रारम्भ कर दी। शिक्षा अवधि के दौरान लाला लाजपतराय ट्रिब्युन समाचार पत्र के संस्थापक श्री श्रीशचन्द्र बसु और देव समाज के संस्थापक श्री अग्निहोत्री से प्रभावित हुए। इन दोनों की प्रेरणा पर चलते हुए समाज सेवा और उसमें सुधार के लिए काम करना आरम्भ किया। हिसार में म्युनिसिपल कमेटी के अवैतनिक मन्त्री रहे और वहाँ पर अनाथों के लिए एक उद्योगशाला स्थापित की। लाला लाजपतराय के लिए समाज सेवा से बढ़कर कोई अन्य काम नहीं था। इसके लिए लाहौर शहर को कर्मभूमि बनाया जहाँ पर उनके प्रेरणा स्रोत व साथी श्री श्रीशचन्द्र बसु और गुरुदत्त विद्यार्थी विद्यमान थे। दयानन्द कॉलेज की उन्नति के कार्य में लग गये। प्रबन्ध समिति के अवैतनिक मन्त्री रहे, बाद में बहुत दिनों तक उपसभापति रहे। अध्यापन का कार्य भी इसी कॉलेज में किया। यहाँ इतिहास व शिक्षा विज्ञान पढ़ाया करते थे। 1905 में अमेरिका गये जहाँ पर शिक्षा संस्थाओं की कार्य-प्रणाली की जानकारी प्राप्त की। वहाँ से लौटकर राष्ट्रीय शिक्षा पर पुस्तकें लिखीं।

लाजपत जी ने 1892 में लाहौर आने पर आर्य समाज में विधिवत् प्रवेश किया और इस मंच से अनाथों, अकाल पीड़ितों व अछूत-समाज की भरपूर सेवा की। 1896 में उत्तर भारत, 1899 में राजपूताना और 1907-08 में उड़ीसा, मध्य प्रदेश व युक्त प्रांत (अब उत्तर प्रदेश) भयंकर अकाल की चपेट में आ गये थे। उस भीषण